''अमृत वृक्षारोपण 2023'' के अवसर पर
असम के माननीय राज्यपाल का अभिभाषण

दिनांक 8 जून 2023, गुरुवार	**समय : 10:00 AM**	**स्थान : चानडूबी, कामरूप**

असम की प्रथम महिला श्रीमति अनीता कटारिया जी,

असम के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमन्त विश्व शर्मा जी,

असम विधान सभा के अध्यक्ष श्री बिश्वजीत दैमारी जी,

माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री श्री चंद्र मोहन पटवारी जी,

उपस्थित असम के माननीय मंत्री, सांसद व विधायकगण

विशिष्ट अतिथि गण, अधिकारी व कर्मचारी गण,

इस क्षेत्र के सम्मानित नागरिकों,

मीडिया के मेरे साथियों,

और उपस्थित देवियों और सज्जनों !

नमस्कार,

''अमृत वृक्षारोपण'' के इस पवित्र अवसर पर आज आपके बीच आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। अभी तीन दिन पहले ही हमने विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। अमृत वृक्षारोपण-2023 का यह कार्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह पर्यावरण के प्रति हमें अपने संकल्पों को पूरा करने की प्रेरणा देता है।

आज हम चानडूबी के इस मनोरम स्थान पर एक विशेष उद्देश्य से एकत्र हुए हैं, जो पर्यावरण संरक्षण तथा राज्य के सतत विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। चानडूबी क्षेत्र में स्वदेशी वृक्ष के 500 पौधों के रोपण के इस ऐतिहासिक क्षण का हिस्सा बनकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

दो महीने पहले असम मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों, असम के सांसदों एवं विधान सभा के सभी सदस्यों के साथ, जब वृक्षारोपण कार्यक्रम को लेकर विमर्श किया गया, तो सबसे पहले हमारे मन में चानडूबी का यह सुंदर स्थान ही आया। मनमोहक सौंदर्य और शांत वातावरण के कारण चानडूबी को राज्य का एक प्राकृतिक रत्न माना जाता है।

चारों तरफ फैली हरियाली, विविध प्रकार की वनस्पतियों, जल सुविधाओं और वन्यजीवों की विभिन्न प्रजातियों के कारण यह स्थान पर्यटकों एवं प्रकृति प्रेमियों के लिए मानो स्वर्ग ही है। आज हम सभी के सामूहिक प्रयासों से, यहां बड़ी संख्या में पौधे लगाकर चानडूबी के सौन्दर्य को और अधिक बढ़ाने काम किया जा रहा है।

मुझे यह विश्वास है कि आज लगाए जा रहे स्वदेशी प्रजातियों के पौधे निश्चित रूप से चानडूबी क्षेत्र की ईको-टूरिज्म क्षमता को मजबूत करेंगे। हम जैसे-जैसे हरियाली का विस्तार कर रहे हैं, इससे एक ऐसा वातावरण का भी निर्माण हो रहा है, जो पर्यटकों और प्रकृति प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे पक्षियों के दर्शन और हरी-भरी वनस्पतियों की प्रचुरता, निःस्संदेह दूर-दूर से आने वाले पर्यटकों को आकर्षित करेगी। भविष्य में ये पेड़ विभिन्न एवियन प्रजातियों के लिए आवास बन जाएंगे, जिनमें सारस, चील, गिद्ध आदि पक्षी भी सुकून से रह पाएंगे। वास्तव में, इन सभी पक्षियों को फलने-फूलने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करके, समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण में हम भरसक योगदान कर रहे हैं।

मैं प्राकृतिक विरासत के संरक्षण और हमारे राज्य के सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता के लिए हमारे समर्पण का समर्थन करने के लिए यहां उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त करता हूं।

मैं इस वृक्षारोपण अभियान की सही ढंग से योजना बनाने और उसे क्रियान्वित करने के लिए वन विभाग की पूरी टीम की भी सराहना करता हूं। हमारे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति चानडूबी क्षेत्र के लोगों की प्रतिबद्धता सराहनीय है। इस तरह के प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण के संरक्षण को सुनिश्चित करते हैं।

इस मौके पर, मैं 2023-24 के दौरान 10,083 हेक्टेयर वन भूमि पर 2 करोड़ से अधिक पौधे लगाने की महत्वाकांक्षी योजना के लिए माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमन्त विश्व शर्मा जी के प्रयासों की सराहना करता हूं।

मित्रों,

मुझे प्राप्त आकड़े की मुताबिक असम में 36 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र हैं। राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों और आरक्षित वनों के साथ, असम ने अपने वनस्पतियों और वन्यजीवों के निर्वाह के लिए एक अनूठा वातावरण प्रस्तुत किया है।

हमारी सरकार प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर विकास करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसलिए हमने औद्योगीकरण का ईको-सिस्टम बनाने के साथ-साथ नए फॉरेस्ट रिजर्व बनाने पर जोर दिया है। असम का वन क्षेत्र 28,312 वर्ग किमी है, जो इसके भौगोलिक क्षेत्र का 36.09 प्रतिशत है।

दूसरी ओर, आरक्षित वन कुल वन क्षेत्र का 66.58 प्रतिशत और अवर्गीकृत वन 33.42 प्रतिशत हैं। असम के संरक्षित क्षेत्र के अंतर्गत सात राष्ट्रीय उद्यान और 17 वन्यजीव अभ्यारण्य शामिल हैं, जो 4938.53 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला हुआ है।

असम वन विभाग भी राज्य के वन, वन्यजीव और जैव-विविधता के संरक्षण लिए लगातार काम कर रहा है। पिछले पांच वर्षों के दौरान राज्य के वनों और वन्यजीवों के संरक्षण और सुरक्षा की दिशा में कई महत्वपूर्ण काम किए गए हैं। इसके अलावा, 2023-24 के वर्तमान मानसून में वन और जैव विविधता संरक्षण पर असम परियोजना के तहत 4,000 हेक्टेयर भूमि पर वृक्षारोपण और CAMPA (कैम्पा) के तहत 6083 हेक्टेयर वृक्षारोपण द्वारा वनों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए लगातार कार्य किया जा रहा है।

मित्रों,

इन दिनों पर्यावरण पर लगातार दबाव बढ़ता ही जा रहा है। इसका एक कारण प्रदूषण का बढ़ना भी है। प्रदूषण के बढ़ने से हमारा पर्यावरण काफी प्रभावित हुआ है। यही वजह है कि वर्तमान में जलवायु बहुत तेजी से गर्म हो रही है। दूसरी ओर, आवास और खाद्य संकट के कारण विभिन्न जीव-जंतुओं की दुर्लभ प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं।

मेरा मानना है कि इस समस्या के समाधान के लिए हमारे समाज को और अधिक समावेशी एवं प्रकृति से जुड़ा हुआ बनाना होगा। हमें प्रकृति को नुकसान पहुंचाने के बजाए इसे संरक्षित करने पर जोर देना होगा।

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हम जो भी कार्य करते हैं, उसमें वृक्षारोपण का कार्य सबसे महत्वपूर्ण है। पेड़ हमें जीवनदायी ऑक्सीजन देता है, जो कार्बन को कम करने में मदद करती है, साथ ही यह ओजोन की परत को सुरक्षित रखती है।

आज यह समय की मांग है कि हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए एक तत्काल ठोस कार्य योजना अपनानी चाहिए। मैं सभी से आह्वान करता हूं कि वे प्रकृति के साथ अपनी नजदीकियां को बढ़ाएं। पर्यावरण को संतुलित बनाए रखें। साथ ही हम अपने जीवन-यापन के तौर-तरीके में थोड़ा बदलाव लाने का प्रयास करें। वनों, पर्यावरण और संसाधनों की संपूर्णता के संरक्षण के लिए पूरे दिल से प्रयास करने का संकल्प लें, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां इस अद्भुत पृथ्वी के अनुभवों से वंचित न रहें।

वृक्षारोपण में हर उम्र के लोग हिस्सा ले सकते हैं और ले भी रहे हैं। परन्तु यह भी ध्यान देने वाली बात है कि वृक्षारोपण के साथ-साथ उसकी देखभाल करना भी बेहद जरूरी है। एक पेड़ को बड़े होने तक उसकी अच्छी तरह से देखभाल करना भी हमारी जिम्मेदारी बनती है।

आइए, आज वृक्षारोपण के जरिए हम अपने पर्यावरण को हरा-भरा बनाने के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी धरती को हरित व अनुकूल बनाए रखने का प्रयास करें।

आइए, हम पर्यावरण संरक्षण, वनीकरण और सतत विकास में अपने प्रयासों को जारी रखने का एक बार पुन: संकल्प लें। इसके साथ ही, जल संरक्षण, सौर ऊर्जा, स्वच्छता, प्राकृतिक खेती, नदी, झील, पहाड़, वन एवं वन्यजीवों की सुरक्षा और संरक्षण हेतु मिलजुल कर प्रयास करें।

हम राज्यवासियों के सहयोग और समर्थन से असम को एक हरा-भरा और अधिक समृद्ध राज्य बना सकते हैं, जहां मानव और प्रकृति का सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व होगा।

अंत में, मैं उन सभी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने चानडूबी क्षेत्र में इन पौधों के रोपण में योगदान दिया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस वृक्षारोपण अभियान से न केवल इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता बढ़ेगी, बल्कि इससे समस्त असमवासियों के मन में एक सकारात्मक भाव जागृत होगा।

धन्यवाद,

जय हिन्द !